Handlooms of India

Geographical Indication (GI) Registered Handloom Products

A Geographical Indication (GI) is a name or sign used on certain products which corresponds to a specific geographical location or origin (e.g. a town, region, or country). India, as a member of the World Trade Organization (WTO), enacted the Geographical Indication of Goods (Registration and Protection) Act, 1999 with effect from 15 September, 2003. The GI tag ensures that none other than those registered as authorised users (or at least those residing inside the geographic territory) are allowed to use the popular product name. Darjeeling tea became the first GI tagged product in India in 2004-05. By May 2017, 295 other GI tagged products have been added to the list.

Department of Posts is releasing a set of Commemorative Postage Stamps on GI Registered Handloom Products as follows:

Baluchari Saree: Baluchari is an exquisite silk saree of West Bengal produced by highly skilled weavers having generations of experience in handloom weaving. The name Baluchari is derived from the word "Baluchar" an area comprising several villages in the district of Murshidabad. In the middle of the 16th century, a group of experienced weavers from Varanasi migrated to Bengal and settled in Baluchar. They were famous for their weaving skill. They made beautiful designs on silk fabrics mainly used as sarees and exclusively patronized by the Nawabs and aristocrats of the society.

Bhagalpur Silk: Bhagalpur is a town of historical importance situated on the southern bank of the Ganga River. Bhagalpur is globally renowned for manufacturing quality silk fabrics and sarees. Presently, Bhagalpur is an important centre for producing Mulberry, Tasar, Eri silks, cotton and their blends. The types of yarn developed from Tasar cocoon are Reeled Tasar, Katiya, Gichha and Balkal yarn etc. Similarly, various qualities of mulberry silk yarn are Reeled, Spun, Dupion, Noil, Matka etc. These are used extensively to develop variety of textiles and products.

Kashmir Pashmina: Pashmina was first made by inhabitants of Kashmir. The quest for making a fine warm fabric to protect them from the harsh winter created Pashmina when they discovered an animal that produced one of the warmest raw materials called Pashm, the name given to the fleece of Changthangi goat (capra hiracus). The best Kashmiri shawls produced today are made from the soft, downy undercoat that grows primarily on the neck and belly of the Himalayan mountain goat, 'capra hiracus'.

Pochampally Ikat: Pochampally Ikat is a saree made in Bhoodan Pochampally, Yadadri Bhuvanagiri district, Telangana. Pochampally Ikat or resist dyeing involves the sequence of tying and dyeing sections and bunches of yarn to a predetermined color scheme prior to weaving. Thus the dye penetrates into the exposed section of the yarn while the tied section remains un-dyed. The patterns formed by this process on the yarn are then woven into fabric.

Tangaliya Shawl: Tangaliya Shawl is a distinct handloom weaving tradition. It consists of rolling a lump of fibres of a contrast color thread along the warp as per design and pushing them together to create the effect of raised dots on the surface of the fabric. Tangalia is an age-old weaving craft which evolved in the Saurashtra region of Gujarat around 700 years ago. It is produced in some parts of the Kutch as well as Junagarh and Surendranagar districts of Gujarat.

Department of Posts is pleased to issue a set of five Commemorative Postage Stamps on GI Registered Handloom Products.

Credits:

Text	:	Based on information received from Ministry of Textiles
Stamps/Miniature Sheet/ FDC/Brochure	:	Shri Kamleshwar Singh
Cancellation Cachet	:	Smt Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

भारतीय हथकरघा
Handlooms of India

भौगोलिक उपदर्शन (जी आई) पंजीकृत हथकरघा उत्पाद

Geographical Indication (GI) Registered Handloom Products

भारतीय हथकरघा

भौगोलिक उपदर्शन (जी आई) पंजीकृत हथकरघा उत्पाद

भौगोलिक उपदर्शन (जीआई) कुछेक उत्पादों पर अंकित नाम अथवा चिह्न है। यह चिह्न किसी भौगोलिक–विशेष स्थान अथवा मूल स्थान (उदाहरण के लिए कोई कस्बा, क्षेत्र अथवा देश) को दर्शाता है। विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के सदस्य होने के नाते भारत ने वस्तुओं का भौगोलिक उपदर्शन (पंजीकरण एवं संरक्षण) अधिनियम, 2003 बनाया, जोकि 15 सितंबर, 2003 को लागू हुआ। जीआई टैग यह सुनिश्चित करता है कि अधिकृत प्रयोक्ता के रूप में पंजीकृत पक्षों के अतिरिक्त कोई अन्य (या कम से कम भौगोलिक क्षेत्र–विशेष के निवासी) संबंधित लोकप्रिय उत्पाद के नाम का इस्तेमाल न कर सके। दार्जीलिंग चाय, 2004–05 में जीआई टैग प्राप्त करने वाला पहला उत्पाद बना। इसके बाद से मई, 2017 तक 295 अन्य उत्पादों को जीआई टैग सूची में शामिल किया गया है।

डाक विभाग जीआई पंजीकृत हथकरघा उत्पादों पर स्मारक डाक टिकटों का एक सेट जारी कर रहा है। इन उत्पादों का विवरण निम्नानुसार है :

बालूचरी साड़ी : बालूचरी, पश्चिम बंगाल की अत्यंत खूबसूरत रेशमी साड़ी है। ये साड़ियां हथकरघा बुनाई में माहिर बुनकरों की अनुभवी पीढ़ियों द्वारा तैयार की जाती हैं। बालूचरी नाम "बालूचर" से उद्धृत है। बालूचर क्षेत्र के अंतर्गत पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले के कई गांव शामिल हैं। 16वीं शताब्दी के मध्य में बनारस के कुछेक अनुभवी बुनकर बंगाल आए और बालूचर में बस गए। ये बुनकर अपने कौशल के लिए प्रसिद्ध थे। ये लोग रेशम के कपड़े पर मोहक डिजाइन बनाते थे। इसी कपड़े से खूबसूरत साड़ियां बनाई जाती थीं, जिनका इस्तेमाल नवाबों और समाज के कुलीन वर्गों द्वारा किया जाता था।

भागलपुरी रेशम : भागलपुर, बिहार में गंगा के दक्षिणी तट पर बसा ऐतिहासिक महत्व का कस्बा है। भागलपुर, बेहतरीन किस्म के रेशमी कपड़े और साड़ियों के उत्पादन के लिए विश्वभर में जाना जाता है। वर्तमान में भागलपुर मलबरी (शहतूत), टसर, ऐरी रेशम, सूत तथा इनके मिश्रण से बने कपड़ों आदि के उत्पादन का महत्वपूर्ण केंद्र है। टसर के खोल (ककून) से विभिन्न प्रकार के धागे तैयार किए जाते हैं जैसे – चरखी, काता, डुपियन, नॉयल और मटका आदि। इन धागों का इस्तेमाल कर विविध प्रकार के कपड़े और उत्पाद तैयार किए जाते हैं।

कश्मीरी पश्मीना : पश्मीना को बनाने की शुरुआत करने का श्रेय कश्मीर के निवासियों को जाता है। यहां के लोग कड़ाके की ठंड से खुद को बचाने के लिए कोई नर्म और गर्म कपड़ा बनाने के प्रयास में थे। इसी कोशिश में इन्होंने चंगथंगी बकरी (कैप्रा हाइरेकस) को खोजा। इस बकरी से प्राप्त ऊन बेहद गर्म थी और इसे पश्म कहा जाता था। आज की कुछेक बेहतरीन कश्मीरी शॉलें इसी हिमालयी पहाड़ी बकरी, कैप्रा हाइरेकस, की गर्दन और पेट पर उगने वाली मखमली ऊन से बनाई जाती हैं।

पोचमपल्ली इकत : पोचमपल्ली इकत, तेलंगाना के यदाद्रि भुवनगिरि जिले के भूदान पोचमपल्ली में बनाई जाने वाली साड़ी है। पोचमपल्ली इकत की प्रक्रिया में धागों के गुच्छों या हिस्सों को एक विशेष प्रक्रिया से बांधना और रंगना (टाई एंड डाई) शामिल है। बुनाई से पहले इन गुच्छों को पूर्व–निर्धारित रंग योजना में डाई किया जाता है। इस प्रकार धागे के खुले हिस्से पर रंग भर जाते हैं और बंधा हुआ हिस्सा सादा रह जाता है। इस प्रकार उभरी शैली वाले इन अत्यंत खूबसूरत धागों से कपड़े बुने जाते हैं।

टंगलिया शॉल : टंगलिया शॉल की एक विशिष्ट हथकरघा बुनाई परम्परा है। इस प्रक्रिया में डिजाइन के अनुसार ताने के साथ–साथ सर्वथा भिन्न रंग के धागे की गांठ को घुमाते हुए दोनों धागों को इकट्ठे दबाया जाता है, जिससे कपड़े पर बिन्दु जैसे उभार उत्पन्न हो जाते हैं। टंगलिया अत्यंत पुरानी बुनाई कला है, जो गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र में लगभग 700 वर्ष पहले शुरू हुई थी। यह कच्छ के कुछ हिस्सों में और गुजरात के सुरेन्द्रनगर और जूनागढ़ जिलों में बनाई जाती है।

डाक विभाग भौगोलिक उपदर्शन (जी आई) पंजीकृत हथकरघा उत्पादों पर पाँच स्मारक डाक टिकटों का एक सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभारः

पाठ	:	वस्त्र मंत्रालय से प्राप्त सूचना पर आधारित
डाक टिकट/मिनियेचर शीट/ प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका	:	श्री कमलेश्वर सिंह
विरूपण मोहर	:	श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा (5)
Denomination	:	500 p (5)
मुद्रित डाक टिकटें	:	606000 प्रत्येक
Stamps Printed	:	606000 each
मुद्रित मिनियेचर शीट	:	110950
Miniature Sheets Printed	:	110950
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	भारतीय प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

For more information visit:

http://www.epostoffice.gov.in

मूल्य: ₹5.00